भारतीय परिप्रेक्ष्य में धार्मिक पर्यटन स्थल का आर्थिक अवलोकन ''उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के संदर्भ में'' एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

व्यावहारिक व्यावसायिक अर्थशास्त्र विषय से पी०एच०डी० की उपाधि हेतु
प्रस्तावित रूपरेखा

शोध निर्देशक :

डॉ० सुनेश्वर प्रसाद
असि० प्रोफेसर
व्यावहारिक व्यावसायिक अर्थशास्त्र विभाग

शोधार्थी

श्याम पाल सिंह

व्यावहारिक व्यावसायिक अर्थशास्त्र विभाग, वाणिज्य संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग आगरा – 282005

2021

प्रस्तावना :–

पर्यटन व्यापक आर्थिक परिणामों के साथ आधुनिक समाज की एक प्रमुख सामाजिक घटना है। दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं के लिए पर्यटन रोजगार सृजन और आय सृजन में सबसे महत्वपूर्ण योगदानकर्ता के रूप में उभरा है। वास्तव में पर्यटन पहले से ही दुनिया के सबसे बड़े उद्योग की स्थिति में पहुंच गया है और दुनिया का सबसे बड़ा रोजगार भी है। पर्यटन एक आर्थिक गतिविधि है जो मूल्यवान विदेशी मुद्रा अर्जित करने में सक्षम है, रोजगार पैदा करता है, ढांचागत विकास को प्रोत्साहित करता है और एक क्षेत्र के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त्र करता है।

एक पर्यटक जो प्रकृति से प्यार करता है और अद्वितीय अनुभवों का पता लगाने की स्वाभाविक इच्छा रखता है, उसे वह सब मिलेगा जो वह कभी भारतवर्ष में खोजने आता था, यह वही भारतभूमि है जिसे भगवान की अवतरण स्थली के रूप में जाना जाता है। देवभूमि के नाम से विश्व विख्यात भारत भूमि के प्रदेशों में मंदिर, घाट, संस्कृति, कला, साहित्य, त्यौहार, और क्षेत्रीय जीवन के हर स्तर से पर्यटक आकर्षित होकर बहुतायात में भारत भ्रमण के लिए आता है। कृष्ण एवं राम जन्मस्थली मध्य भारत की संस्कृति को वर्णित करता है तथा धार्मिक रूप से ऐसा स्थान सम्पूर्ण पृथ्वी पर कोई अन्य गन्तव्य उपलब्ध नहीं है।

वर्ल्ड ट्रैवल्स एण्ड टूरिज्म काउंसिल (डब्लू०टी०टी०सी०) के हालिया शोध निष्कर्षो के अनुसार "यात्रा और पर्यटन का दुनिया में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर पहले से भी अधिक प्रभाव पड़ता है। सरकारों द्वारा यात्रा और पर्यटन को एक रणनीतिक प्राथमिकता बनाने के लिए एक सम्मोहक साधन के रूप में प्रस्तुत करते है। राजनीतिक दृष्टिकोण से यात्रा और पर्यटन की सूचनाए ऐसे समय में आती हैं, जब रोजगार सृजन सरकार के एजेंडे के शीर्ष पर प्रस्तुत किया जाता है।

इस क्षेत्र की बाजार में हिस्सेदारी वैश्विक संदर्भ में अल्प है। किसी भी राज्य की पहचान उच्चतम क्षमता वाले गन्तव्य के रूप में की गई है। इस क्षेत्र में भारत और यूरोप के पारंपरिक उत्पादन बाजारों में यात्रा मध्यस्थों द्वारा बार–बार पुष्टि की जाती है।

इस प्रकार पर्यटन उत्तर भारत में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन के लिए सबसे शक्तिशाली इंजन के रूप में हो सकता है जो राज्य की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ा सकता है। वास्तव में

अगर हम ईमानदारी से अपने अन्य आर्थिक क्षेत्रों की सीमाओं और कमजोरी का विश्लेषण करते है, तो हम महसूस करेंगे कि हमारे पास कुछ विकल्प व संभावनाएं है, जैसे जैव–प्रौद्योगिकी और सूचना प्रौद्योगिकी, जिनका विकास करना अभी बाकी है। इस प्रकार पर्यटन केवल उपलब्ध विकास विकल्प के रूप में उभरता है।

धार्मिक पर्यटन के महत्व को विकासशील और विकसित दोनों देशों में मान्यता दी गई है, इसलिए पर्यटन के क्षेत्र में ट्रस्ट एवं सरकारी विभागों की स्थापना की गयी है। इस क्षेत्र मे विकास के लिए व्यापक प्रसार, प्रयोजन व छोटे व्यवसाय और बहुराष्ट्रीय निगमों के विस्तार में योगदान के साथ साथ पर्यटन उद्योग से लाभ प्राप्त करने में देखा जा सकता है।

भारत एक देश नहीं बल्कि एक महाद्वीप है जहां तक पर्यटकों के आकर्षण का संबंध है, दुनिया के किसी भी देश के लिए इतनी विविधताए किसी एक ही देश में नहीं मिल सकती। यहां की विविध जलवायु एवं असमान वितरण से देश के पक्ष में इतनी समृद्ध विरासत एवं संस्कृति का दावा नहीं किया जा सकता है। भारत अपने विशाल और विविध स्थलाकृतियों, सांस्कृतिक एवं लौकिक संसाधनों की पूर्ण क्षमता का एहसास करने के लिए सरकार और जनता के प्रयासों के कारण उत्तरोत्तर पर्यटकों का केन्द्र बिन्दु रहा है।

हाल ही में पर्यटन उद्योग आंतरिक पर्यटन से बाह्य पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्थानान्तरित कर दिया गया है, क्योंकि कई देश पर्यटकों के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहे हैं। कुछ राष्ट्रीय नीति निर्माताओं ने स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान के लिए आंतरिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अपनी प्राथमिकता को स्थानांतरित कर दिया है।

भारत की समृद्धि, संस्कृति और भौगोलिक विविधता पर्यटकों के अनुभवों को एक विस्तृत श्रृंखला का आधार प्रदान करती है, जिसमें विविध धर्म, संस्कृति, साहसिक घटनाये, आध्यात्मिक वातावरण, समाज कल्याण और स्वास्थ्य शामिल है। विदेशी पर्यटकों की जिज्ञासा भारत में विदेशी मुद्रा की कमाई के लिए विशाल रोजगार सृजन के साथ पर्यटन को विकसित करने में योगदान देता है। पारंपरिक रूप से मान्यता प्राप्त लाभों को स्वीकार करने के अलावा, यह देश के सामाजिक, आर्थिक उद्येश्यो को आगे बढ़ाने में एक प्रमुख भूमिका निभा सकता है।

धार्मिक पर्यटन की परिभाषा :

फ्रैंक फाहे के अनुसार ''धार्मिक पर्यटन मनुष्य की आस्था, तपस्या, अनुष्ठान, व्रत के माध्यम से आत्म शांति की अनुभूति के लिए किया जाने वाला यात्रा क्रम है, जिसे तीर्थ यात्रा भी कहा जा सकता है।

एक अमेरिकी समाजशास्त्री 'चार्ल्स एच लिप्पी' के अनुसार – धार्मिक पर्यटन को एक अलौकिक शक्ति के समान बताया है जिसके द्वारा मानव सत्य के मार्ग पर चलता है एवं समाज में व्याप्त अंधविश्वास को त्यागने के लिए प्रेरित होता है।

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है वर्तमान समय में मनुष्य मानसिक उद्वेलनों को दूर करने के लिए आध्यात्म की शाखा धर्म के द्वारा शांति को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करता रहता है इसी कारण वह अनेक धार्मिक स्थलो की यात्राए करता है, जिसे पर्यटन के शाखा धार्मिक पर्यटन का भी प्रचार एवं प्रसार होता है।

पर्यटन उद्योग – एक अवलोकन

पर्यटन दुनिया का सबसे तेजी से बढ़ता उद्योग है और हाल के वर्षो में विकासशील देशों की अर्थव्यवस्थाओं में तेजी से प्रभावी भूमिका निभाने के लिए आया है। ज्ञान एवं सुख की अनुभूति के लिए मनुष्य की इच्छा और उसके चारों ओर आध्यात्म से जुड़े गूढ रहस्यों की खोज के प्रयासों को जारी रखने के कारण उसे अप्रभावित और अज्ञात दुनिया की ओर ले जा रहा है। अक्सर विदेशी भूमि के यह दौरे आर्थिक और वाणिज्यिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए किए जाते है।

भारत में पर्यटन देश की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है और तेजी से बढ़ रहा है। यू0एन0डब्ल्यू0टी0ओ0 के अनुसार विश्व यात्रा और पर्यटन परिषद गणना की है कि पर्यटन उत्पन्न 16. 91 लाख करोड़ (यू०एस० 240 बिलियन डालर) या 9.2 प्रतिशत भारत में ''सकल घरेलू उत्पाद 2018 के अनुसार और अनुमानित 42,673 मिलियन नौकरियां, अपने कुल रोजगार का 8.1 प्रतिशत है।

इस क्षेत्र को 2028 तक जी०डी०पी० का 9.9 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ाकर 32.05 लाख करोड़ (460 बिलियन डालर) होने का अनुमान है। अक्टूबर 2018 में भारत की चिकित्सा पर्यटन क्षेत्र का मूल्य लभगम जी0डी0पी0 का 9.2 प्रतिशत था जो कि 42.673 मिलियन रोजगार सृजन में योगदान करता

है, और इसे 2025 तक 13–14 बिलियन अमरीकी डॉलर तक बढ़ने का अनुमान है। 2018 में करीब 341,178 विदेशी रोगियों ने चिकित्सा की तलाश के लिए भारत की यात्रा की। इसी प्रकार धार्मिक पर्यटन के क्षेत्र में पर्यटन का करीब 15.6 प्रतिशत योगदान है जो कि करीब 37.44 बिलियन अमेरिकी डालर तथा भारत में कुल 639 मिलियन नौकरियॉ एवं रोजगार प्रदान करता है।

पर्यटन के क्षेत्र

पर्यटन प्राथमिक रूप से अलग अलग उद्‌देश्यों की पूर्ति के लिए एक यात्रा को निर्धारित करता है। जिस यात्रा का सम्बन्ध विभिन्न क्षेत्रों से होता है जो निम्न पर्यटन क्षेत्रा में से सम्बन्धित होता है।

- ऐतिहासिक पर्यटन
- धार्मिक पर्यटन
- पर्यावरणीय पर्यटन
- सांस्कृतिक पर्यटन
- रोमांचक पर्यटन
- संगीत पर्यटन
- ग्रामीण पर्यटन
- मनोरंजक पर्यटन
- जातीय पर्यटन

चूकि भारतवर्ष विविध धर्मो एवं सभ्यताओं का देश है यहॉ धार्मिक पर्यटन के क्षेत्र में विकास के लिए निरन्तर प्रयास किए जाते रहे है। यहॉ प्रत्येक धर्म से जुड़े हुए लोग अपने अपने धार्मिक अनुष्ठानों को पूरा करने के लिए इन धार्मिक स्थानों पर पहुॅचते है तथा साथ ही साथ इन स्थानों से जुड़ी हुई मान्यताएं एवं पौराणिक प्रथाओं के आधार पर जाकर आध्यात्म के द्वारा शांति की अनुभूति करते है।

इस दृष्टिकोण से मध्य भारत में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश राज्यों में प्राचीन एवं प्रसिद्ध धार्मिक स्थल अधिकाधिक मात्रा में हैं जहॉ प्रतिवर्ष बहुतायात में तीर्थ यात्री भ्रमण के लिए आते है तथा इन क्षेत्रों में पर्यटन के माध्यम से रोजगार एवं आर्थिक विकास के अवसरो का सृजन होता है। इस दृष्टि में भारत में अनेक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है जो निम्नवत्‌ हैं।

सारणी 1 : विगत वर्षो में भारतीय एवं विदेशी पर्यटकों द्वारा किया गया भ्रमण (2014 से 2018)

वर्ष	पर्यटक भ्रमण		वार्षिक बृद्धि दर	
	भारतीय पर्यटक (करोड़ में)	विदेशी पर्यटक (करोड़ में)	भारतीय पर्यटक (प्रतिशत में)	विदेशी पर्यटक (प्रतिशत में)
2014	128.280	2.233	–	–
2015	143.197	2.332	11.63	4.4

2016	161.538	2.471	12.81	5.95
2017	165.248	2.688	2.30	8.79
2018	185.931	2.903	12.51	7.99

स्त्रोत सारणी : Ministry of tourism, Government of India, Ministry of tourism, Government Uttar Pradesh, Ministry of tourism, Madhya Pradesh.

सारणी 2 : भारत में प्रसिद्ध धार्मिक स्थल

प्रसिद्ध शहर	विशेषताएं	महत्व	धार्मिक महत्व
मदुरै	दक्षिण भारत अपने मंदिरों की संख्या के लिए प्रसिद्ध है।	मीनाक्षी मंदिर जो देवी पार्वती का एक रूप के लिए प्रसिद्ध है।	आत्मशुद्धिकरण
अमृतसर	स्वर्ण मंदिर इसका निर्माण कई साल पहले पांचवें गुरू, गुरू अर्जन और ''सरोवर'' द्वारा किया गया था।	सिख समुदाय के लिए सबसे पवित्र तीर्थ शहर होने के नाते।	न्याय और लौकिक गतिविधि को दूर करने का प्रतीक है।
शिरडी	संत साई बाबा मन्दिर, जहां हिंदू और मुसलमान दोनों भगवान की पूजा करने आते हैं।	साईं बाबा को समर्पित, जिन्हें भगवान शिव का अवतार माना जाता है।	साईं बाबा सभी धर्मो को एक करने में विश्वास करते हैं।
वैष्णों देवी धाम	जम्मू और कश्मीर में इस पवित्र स्थान	माता वैष्णों देवी ने इस पहाड़ी से भगवान राम की जीत की प्रार्थना की।	माता वैष्णों देवी भक्तों को मन की शांति और शक्ति प्रदान करती है।
तिरूपति	त्रिपुला वेंकटेश्वर मंदिर और इसकी समृद्धता के कारण आंध्र प्रदेश में तिरूपति बहुत लोकप्रिय है।	भारत के सबसे अमीर तीर्थस्थल के रूप में यह प्रसिद्ध है।	शरीर को आनंद प्राप्त करने के लिए जाना जाता।
बैलूर	बैलूर एक पवित्र स्थान है जिसमें चिनकेश्वरा मंदिर बहुत लोकप्रिय है।	12वीं शताब्दी में निर्मित	कलाकृति रामायण और महाभारत पर आधारित चित्र प्रदर्शित है।
हेलबिड	होयसलेश्वर मंदिर तीर्थस्थल को शांतलेश्वर कहा जाता है।	यहां की उत्कृष्ट वास्तु कला का नमूना है।	भगवान शिव की पूजा के लिए बनाया गया है।
सबरीमाला	केरल में सबरीमाला एक आध्यात्मिक भूमि के रूप में जाना जाता है।	भगवान अय्यपन ने इस स्थान पर ध्यान की शुरूआत की।	यह मंदिर सभी धर्मो के लोगों का स्वागत करता है।
मदुरै	मदुरई के उत्तर पश्चिम में पलानी हिल्स की तलहटी में स्थित है।	पंचामृत और जावाडु विभूति	यह भगवान मुरूगन को भगवान कार्तिकेय के नाम से भी जाना जाता है।
रामनाथपुरम	यह पम्बन द्वीप पर स्थित है, जो एक चैनल द्वारा शहर से जुड़ा है, जिसे पम्बन चैनल के नाम से भी जाना जाता है।	यह भारत में सभी हिंदू मंदिरों की तुलना में सबसे लंबा गलियारा है।	यह उन 12 ज्यांतिर्लिग मंदिरों में से एक है, जहां भगवान शिव को प्रकाश के देवता के रूप में पूजा जाता है।
कोणार्क	कोणार्क उड़ीसा का एक प्रसिद्ध शहर है जो सूर्य मंदिर के लिए सबसे प्रसिद्ध है।	यह एक आकार में बनाया गया था जो एक बड़े रथ जैसा दिखता है, जिसमें 7 घोड़े और 12 पहिए हैं।	राक्षस गयासुर की हत्या करने के बाद भगवान विष्णु कोणार्क में अपने कमल रखते हैं।
पुरी	भारत में कई जगन्नाथ मंदिर है,	हिंदुओं के लिए सबसे	यह राजा इंद्रदयुम्न

	लेकिन पुरी, ओडिशा में सबसे लोकप्रिय है।	पवित्र तीर्थ स्थानों में से एक है।	द्वारा बनाया गया था,
त्रिवेंद्रम	तिरूवनंतपुरम में स्थित श्री पद्मनास्वामी मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है।	यह भारत के सबसे अमीर हिंदू मंदिरों में से एक है।	यह भारत में 108 दिव्य मंदिरों में से एक है।
उत्तराखंड	उत्तराखंड के एक छोटे से शहर में स्थित, यहां यह सबसे प्रसिद्ध स्थान उत्तरी धाम का बद्रीनारायण मंदिर है।	यह भगवान विष्णु के 108 वास (दिव्य देशम) में से एक है।	इस मंदिर में रखी गई मुख्य मूर्ति की खोज 9वीं शताब्दी महान संत आदि शंकराचार्य ने की थी।
द्वारिका	हिंदुओं का चौथा धाम पश्चिम में है, जो कि गुजरात में है। यह भगवान कृष्ण की राजधानी होने के लिए लोकप्रिय है।	यह भारत के सात सबसे धार्मिक शहरों में से एक है।	महाकाव्य महाभारत में द्वारिका शहर का उल्लेख किया गया है।
मुंबई	भगवान गणेश को समर्पित सिद्धिविनायक मन्दिर।	मुंबई और पूरे भारत में सबसे अमीर मंदिरों में से एक की उपस्थिति।	इसे वर्ष 1801 में बनाया गया था।
देशनोक	राजस्थान अपनी संस्कृति और ईश्वर में आस्था के लिए जाना जाता है। जिन्हें देवी दुर्गा के अवतारों में से एक माना जाता है।	करणी माता का यह मंदिर चूहों के मंदिर के रूप में भी जाना जाता है।	लगभग 20,000 काले चूहों की उपस्थिति कई लोगों द्वारा आशीर्वाद के लिए पूजा जाता है।
केदारनाथ	मंदाकिनी नदी के तट पर स्थित, मंदिर पूरे भारत में बहुत लोकप्रिय धार्मिक स्थलों में से एक है।	यह पांडवों द्वारा बनाया गया था और फिर संत आदि गुरू शंकराचार्य द्वारा पुर्नजीवित किया गया था।	भगवान केदार खण्ड के स्वरूप में भगवान शिव को समर्पित है।
वाराणसी	वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर कई पर्यटकां को आकर्षित करता है और गंगा नदी के तट पर स्थित है।	इसके मलमल और रेशमी कपड़े, इत्र, हाथी दांत और सुंदर मूत्रियां प्रसिद्ध है।	भगवान शिव को प्रकाश के रूप में पूजा जाता है, और विश्वनाथ के भक्ती भक्ति के लिए भी।
सोमनाथ	ज्योतिलिंग मंदिरों में से एक प्रभात पाटन में स्थित सोमनाथ मंदिर है, जो पश्चिमी घाटों के पास गुजरात में है।	‘‘सोमनाथ‘‘ नाम का अर्थ चंद्रमा देवता का रक्षक है।	यह भगवान शिव के बारह ज्योर्तिलिंग तीर्थ स्थलों में से एक है।
हम्पी	विजयनगर शहर में हम्पी एक पवित्र स्थान है जहां भारत में भगवान शिव के समर्पण में विरूपाक्ष मंदिर बनाया गया है।	यह भारत के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है।	भगवान विष्णु और भगवान शिव की पूजा करने आते हैं।
जबलपुर	ज्बलपुर में चौंसठ योगिनी मंदिर भारत के सबसे पुराने तीर्थ स्थलों में से एक है और देवी दुर्गा के भक्त देश भर से इसकी पूजा करने आते हैं।	चौसठ योगिनी मंदिर खजुराहो के मंदिर प्रसिद्ध है।	देवी दुर्गा की पूजा उनके चौंसठ योगिनियों के साथ की जाती है।
विष्णुपुर	पश्चिम बंगाल के छोटे से शहर, विष्णुपुर में बहुत सारे सुंदर टेराकोटा मंदिर है एवं जोर बंगला	टेराकोटा मंदिर भव्य बंगाली शैली की वास्तुकला को सर्वश्रेष्ठ	यह बंगाल में संस्कृति के प्रमुख केंद्रों में से एक था जब राजाओं ने

	मंदिर, मदनमोहन मंदिर, लालजी मंदिर सबसे प्रसिद्ध हैं।	बनाता है।	शासन किया और हर कोई यहां शास्त्रीय संगीत सीखने आया।
श्रीरंगम्	श्रीरंगम् अपने रंगनाथस्वामी मंदिर के कारण एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है जहां लोग रंगनाथस्वामी की पूजा करते हैं।	रंगनाथस्वामी मंदिर, जो दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक परिसरों में से एक है।	रंगनाथस्वामी को भगवान विष्णु के वैराग्य रूप के रूप में जाना जाता है।

सारणी 3 : उत्तर प्रदेश के प्रमुख तीर्थ पर्यटन स्थलों का भारतीय एवं विदेशी पर्यटक भ्रमण (2014—18)

वर्ष	**पर्यटक भ्रमण**		**वार्षिक बृद्धि दर**	
	भारतीय पर्यटक (करोड़ में)	**विदेशी पर्यटक (करोड़ में)**	**भारतीय पर्यटक (प्रतिशत में)**	**विदेशी पर्यटक (प्रतिशत में)**
2014	18.427	29.097	—	—
2015	20.651	31.040	12.06	6.67
2016	21.354	31.568	3.40	1.69
2017	23.397	35.562	9.56	12.65
2018	28.507	37.807	21.84	6.31

सारणी 4 : मध्य प्रदेश के प्रमुख तीर्थ पर्यटन स्थलों का भारतीय एवं विदेशी पर्यटक भ्रमण से आय (2014 से 2018)

वर्ष	**पर्यटक भ्रमण**		**वार्षिक बृद्धि दर**	
	भारतीय पर्यटक (करोड़ में)	**विदेशी पर्यटक (करोड़ में)**	**भारतीय पर्यटक (प्रतिशत में)**	**विदेशी पर्यटक (प्रतिशत में)**
2014	6.289	0.2803	—	—
2015	6.559	0.3161	2.70	1.13
2016	6.881	0.4213	3.22	0.97
2017	7.803	0.4816	1.18	1.24
2018	9.053	0.6812	1.38	2.93

स्त्रोतः सारणी 2 एवं 3 Ministry of tourism, Government of India., Ministry of tourism, Government Uttar Pradesh., Ministry of tourism, Madhya Pradesh.

उपलब्ध साहित्य समीक्षा

1. मिश्रा और ओझा (2014) ''रोल ऑफ टूरिज्म इन इकॉनॉमिकल डेवलेपमेंट''[5] ने भारत के विकास में पर्यटन उद्योग की भूमिका की जांच की। लेखकों कने दुनिया के अन्य देशों के साथ भारतीय पर्यटन उद्योग के प्रदर्शन की तुलना की। पिछले एक दशक में अंतराष्ट्रीय विपणन पहल (जैसे अतुल्य भारत अभियान) ने उत्कृष्ट परिणाम दिए और पर्यटन में भारत के प्रदर्शन में सुधार हुआ। लेकिन, अन्तराष्ट्रीय पर्यटन आंकड़ों के गहन अध्ययन से पता चला है कि ''भारत की पर्यटन क्षमता अभी अस्पष्टीकृत है और वर्तमान विपणन और प्रचार के प्रयास जो किए जा रहे हैं, वह पर्याप्त नहीं हैं। भारत का प्रदर्शन दुनिया

के प्रमुख पर्यटन बाजारों (जैसे – संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस, चीन, यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी आदि) के प्रदर्शन से काफी नीचे पाया गया। यहां तक कि दुनिया की गई छोटी और कम विकसित अर्थव्यवस्थाओं (जैसे – तुर्की, स्पेन, थाईलेंड, मलेशिया, इंडोनेशिया, ताइवान आदि) के पर्यटन उद्योगों ने भारतीय पर्यटन उद्योग की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया। लेखकों ने विपणन प्रयासों को तेज करने और भारतीय पर्यटन उद्योग में विकास की बाधाओं को दूर करने की एक मजबूत आवश्यकता महसूस की।

2. विश्व पर्यटन संगठन (2014)[21] ने टूरिज्म हाइलाइटस 2014 पर एक परीक्षा की। उन्होंने बताया कि पर्यटन निर्यात राजस्व के माध्यम से सामाजिक आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण चालक है, नौकरियों और उद्यमों के निर्माण मे माध्यम से समृद्धि और बुनियादी ढांचे के विकास से भलाई है। अध्ययन में निर्धारित किया गया कि पर्यटन निरंतर विस्तार और विविधीकरण के साथ बढ़ रहा है और दुनिया भर में गंतव्यों की बढ़ती संख्या में वृद्धि हुई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि पर्यटन उद्योग दुनिया का सबसे बड़ा और तेजी से बढ़ता क्षेत्र है। इसके बावजूद, इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि 1950 में अंतराष्ट्रीय पर्यटक आगमन लगभग 25 मिलियन से बढ़कर 1980 में 278 मिलयन हो गया, 1995 में 528 मिलयन और 2013 में 1087 मिलियन हो गया।

3. मोनिका पांडे और अरूणेश पाराशर (2012), जर्नल –''ए स्टडी ऑफ सोशल एण्ड स्प्रिचुअल इम्पैक्ट ऑफ स्प्रिचुअल टूरिज्म ऑन कमिंग वैक्टर''[6] ने अपने पेपर में मध्य प्रदेश पर्यटन उद्योग के सामने आने वाली चुनौतियों का वर्णन करने के लिए प्रकाश डाला। इस अध्ययन ने सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर आध्यात्मिक पर्यटन के सकारात्मक प्रभाव की जांच की। इसक अलावा, यह भी पता चला है कि बड़ी संख्या में लोग एक यात्रा प्रेरक के रूप में धार्मिक या पवित्र स्थानों, पर जा रहे हैं। इसमें यह भी कहा कि यह प्रथा दुनिया के विभिन्न हिस्सों में व्यापक रूप से फैली हुई है और इसे जैन धर्म, ईसाई धर्म और इस्लामी, बौद्ध धर्म में देखा जा सकता है जिसमें धार्मिक आंदोलनों और संस्थानों द्वारा आध्यात्मिकता का मानव समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अंत में, लेखकों ने यह निष्कर्ष निकाला कि आध्यात्मिक गुणो में एक महत्वपूर्ण सुधार है जैसे कि सहिष्णुता के स्तर में 84 की वृद्धि प्रतिभागी या पर्यटक, पर्यटक के जीवन शैली में बदलाव आदि।

4. पुजारी कृष्णैया (2012), ''प्राब्लम्स् एण्ड प्रोस्पेक्ट्स ऑफ टूरिज्म इन आंध्र प्रदेश – ए केस स्टडी ऑफ चित्तूर डिस्ट्रिक''[7] ने अपने अध्ययन में माना कि आंध्र प्रदेश में पर्यटन की समस्याएं और संभावनाएं हैं। अध्ययन में चित्तूर जिले में एक मामले के विश्लेषण पर भी प्रकाश डाला गया है, जिसमें आवश्यक पर्यटक सुविधाओं और चित्तूर जिले के पर्यटन के संदर्भ में उपलब्ध अंर्तसंबधों के बारे में समग्र दृष्टिकोण उपलब्ध है। अध्ययन ने स्पष्ट रूप से उपलब्धता, गुणवत्ता और विभिन्न प्रकार के आवास, भोजन और परिवहन से संबंधित सुविधाओं और कई अन्य संबद्ध सेवाओं के संदर्भ में मांग और आपूर्ति के बीच की खाई को खोजा है। अध्ययन से पता चला है कि विभिन्न पर्यटक सुविधाओं के संदर्भ में आपूर्ति न केवल अपर्याप्त है, बल्कि अप्रभावी है। हालांकि, शोधकर्ता ने विशेष रूप से और विशिष्ट भविष्य में सहायक आकर्षण केंद्रों में विशेष रूप से और शेष सहायक आकर्षण केंद्रो में बारह प्रमुख आकर्षण केंद्रों की समस्याओं और सम्भावनाओ का उल्लेख किया है।

5. विजयानंद एस (2012), ''पिलग्रिज्म् टूरिज्म मेनेजमेंट इश्यू एण्ड चेलेन्जेज विद रिफरेन्स टू तमिलनाडु''[20] ने अपने अध्ययन में तीर्थस्थल पर्यटन प्रबंधन की उत्पत्ति और विकास पर ध्यान केंद्रित किया। अध्ययन में यह भी ध्यान केंद्रित किया गया है कि तीर्थयात्रा पर्यटन व्यक्तिगत पहचान, तीर्थ पर्यटन स्थलों के विकास और तीर्थ पर्यटन की भूमिकाओं की बढ़ती स्वीकृति की अभिव्यक्ति है जो सच्चाई, विश्वास और नैतिकता की अवधारणाओं का पता लगाने का एक तरीका है जिसे आमतौर पर अपदेखा किया जाता है या माना नहीं जाता। अध्ययन में तीर्थ पर्यटन के विकास और तीर्थ पर्यटन की भूमिका और दक्षिण भारत में तीर्थ पर्यटन की अथव्यवस्था का पता चला है। इस अध्ययन में प्रस्तुत किए गए आंकड़े तीर्थ पर्यटन विकास की क्षमता का संकेत देते हैं। विश्लेषण से पता चलता है कि तीर्थ पर्यटन स्थल के विकास को क्षेत्र के अधिक हिस्सों में फैलाना संभव होना चाहिए। विशेष रूप से तीर्थयात्रा पर्यटन सांस्कृतिक और प्रकृति के आधार पर क्षेत्रीय विकास को प्रोत्साहित करने के लिए पहचाने जाने वाले प्रमुख स्थलों का उपयोग करना संभव होना चाहिए। अध्ययन में यह सुझाव दिया गया तीर्थ पर्यटन क्षेत्र एक स्वर्गीय गंतव्य के रूप में विकसित किया जा सकता है।

6. सिंह, राणा पी०बी० (2011), ''पिलग्रिज्म एण्ड रिलीजियस टूरिज्म इन इंडिया''[14] ने अपने अध्ययन में भारत में तीर्थयात्रा और धार्मिक पर्यटन पर ध्यान केन्द्रित किया। इस अध्ययन में काउंटरिंग कॉन्टेस्ट

और सेडक्शन पर भी जो दिया गया है, जो भारत में धार्मिक तीर्थयात्राओं और धार्मिक पर्यटन की गति को गंभीर रूप से उज्जवल करने वाली 83 (पौराणिक कथाओ) के प्रतिबिंब को दर्शाता है और साथ ही साथ चल रहीं प्रथाओं और घटनाओं पर भी जोर देता है। लेखक ने देखा है कि मानव जीवन के दो पक्षों, पवित्र और अपवित्र, परस्पर क्रिया और प्रतिकार करते है, फलस्वरूप प्रतियोगिता, प्रलोभन और अंतर में बदल जाते हैं। हालांकि , वे पूर्णता के गठन में विभिन्न स्तरों पर मिलते हैं जहां पृथ्वी आधारित मानवता स्थलीय देवत्व के साथ मिलती है। अध्ययन में पाया गया कि तीर्थयात्रा की पवित्रता को कभी–कभी समय बीतने के बाद पर्यटन की अपवित्रता से खतरा हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप प्रतिनिधित्व, निरंतरता, नियंत्रण और शक्ति, असंगति और प्रतिस्पर्धा के लिए चिंता का विषय होता है –मुद्दे परंपराओं को आकर्षित करने का संदेश देते हैं। तीर्थयात्रा–पर्यटन की पारिस्थितिकी के रूप में भी प्राचीन काल में विकसित की गई अंर्तसंबंध की खोज में बड़ी वास्तविकता में शुद्ध किया जा सकता है।

7. शू–पिन चियु (2011), ''स्टडी ऑन रिस्क परसेप्शन् ऑफ इंटरनेशनल टूरिज्म इन इंडिया''[11] ने अपने अध्ययन में भारत में अंतराष्ट्रीय पर्यटकों की जोखिम धारणाओं पर प्रकाश डाला। इसने पर्यटकों से अपराध की आशंकाओ और संबंधित कारकों पर चर्चा करने के लिए मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया को समझने का प्रयास किया। इस अध्ययन ने अंतराष्ट्रीय पर्यटकों की भारत यात्रा के दौरान जांच की और यह भी पता लगाया कि उत्पीड़न, धोखाधड़ी और लार्चन अपराध है जो पर्यटकों के द्वारा सबसे अधिक अनुभव किया जाता है। महिला और एशियाई पर्यटकों ने पुरूष और यूरोपीय पर्यटकों की तुलना में विभिन्न रक्षा प्रतिक्रियाएं लीं। व्यवसायिक पर्यटकों की तुलना में, भारत में पर्यटन स्थलों का भ्रमण करने वाले पर्यटकों के शिकार होने की अधिक संभावना है। इसके अलावा, भारत में विभिन्न पीड़ित अनुभव विभिन्न प्रकार के पीड़ित जोखिम धारणा को प्रभावित करते हैं। शोध में पता चला है कि यात्रा पीड़ितों के जोखिम की धारणा न केवल पर्यटकों के शिकार होने के डर को प्रभावित करती है बल्कि उनकी प्रतिक्रियाओं को भी प्रभावित करती है। अध्ययन के परिणामों से संकेत मिलता है कि महिलाएं स्पष्ट रूप से खुद का व्यवहार करती हैं जैसे कि रात में बाहर जाने से बचना, आकस्मिक रूप से कपड़े पहनना, अकेले सार्वजनिक परिवहन लेने से डरना और सुरक्षा के लिए होटलों में रहना। यूरोपीय लोगों की तुलना में, एशियाई

किसी भी रक्षा प्रतिक्रियाओं को लेने की अधिक संभावना रखते हैं। गंभीर हिंसा के शिकार पर्यटक खुद की सुरक्षा के लिए होटलों में रूकेंगे।

8. सुथेशना बाबू, सीताकंठ मिश्रा और बिवराज भूषण परिधि (2008), ''टूरिज्म डेवलेपमेन्ट रीविजिटेड, कांसेप्ट, इश्यूज् एण्ड पैराडिगम्''[1] का मानना है कि पर्यटन उद्योग तेजी से विकास के लिए पर्यटन के दो अलग–अलग अनुशासन संरचनाओं – पर्यटन व्यवसाय अध्ययन और पर्यटन विकास अध्यनों में पर्यटन की स्थापना की मांग की है।

9. सुनंदा और सुरेश कुमार (2008), जर्नल–''इकोनोमिक टूरिज्म सिग्निफिकेन्स् इन केरला''[16] ने उल्लेख किया कि उत्तर प्रदेश पर्यटन का स्वर्ग है और सामाजिक उन्नति में अग्रणी राज्य है। लागत प्रभावी उपचारों, गुणवत्ता वाले मानव संसाधनों और प्राकृतिक एवं सामाजिक विविधता की उपलब्धता इस प्रदेश को एक स्वप्निल गन्तव्य बनाती है, यह घरेलू पर्यटकों को भी विदेशी पर्यटकों के साथ समान रूप से अपनी ओर आकर्षित करती है। क्योंकि भारतीय विदेशी यात्रियों की तुलना में अधिक खर्च कर रहे है। ''अतिथि देवो भव'' अवधारणा का प्रचार करने से पहले, यह समझे कि न केवल विदेशी, बल्कि भारतीय भी आस्तिक एवं आशावादी है।

10. शालिनी सिंह (2008), ''प्रोफाइल ऑफ इंडियन टूरिज्म''[13] का मानना है कि पर्यटन के विकास में किसी भी प्रकार के प्रयास को विधिवत रूप से उभरती हुई पर्यटन प्रवृत्तियों, पर्यटन वरीयताओं, पर्यटकों के व्यय के आंकड़े, रोजगार सृजन, पर्यटन विकास के वर्तमान चरण पर पर्यटकों की राय और सुझाव लेना चाहिए।

11. थॉमस थार्रिन एवं गोपालकृष्णन नायर (2008), ''जर्नल– मेडिकल टूरिज्म इन केरला, रिव्यू ऑफ सोशल सांइसेज्''[18] का मानना है कि पर्यटन के जल्द से जल्द रूपों में से कुछ सीधे स्वास्थ्य बढ़ाने और करने के उद्देश्य से किया गया था। पिछले एक दशक में, पर्यटन उद्योग, चिकित्सा पर्यटन में एक नए और अलग स्थान के उद्भव के साथ, विश्राम, व्यायाम या स्पा की यात्रा के माध्यम से छुट्टी के दौरान बेहतर स्वास्थ्य प्राप्त करने का प्रयास एक नए स्तर पर ले जाया गया है।

12. वेणुगोपाल (2008), जर्नल–''गेटवे ऑफ टेक्नीकल टूरिज्म''[19] का कहना है कि पर्यटकों की रूचि और प्राकृतिक सुंदरता के स्थान पर अक्सर इस तथ्य के कारण बड़े पैमाने पर ग्राहकों का ध्यान

आकर्षित नहीं करते है कि वे अच्छी तरह से विपणन नहीं करते। शुरूआती दिनों में इंटरनेट, ग्राफिक्स वीडियो, ध्वनि उपकरणों द्वारा पर्यटन का समर्थन सहीं प्रकार से नहीं किया जाता था, इसलिए पर्यटन उत्पादों को प्रभावी ढंग से नेट पर विपणन नहीं किया जा सकता था। अब विभिन्न रीतियों की शुरूआत के साथ चीजें काफी बदल गई हैं।

13. के0 रवि (2007), जर्नल –''सस्टेनेबल टूरिज्म–ए वे फॉरवर्ड फ्राम ईको टूरिज्म''[9] ने कहा कि, दुनिया भर में पर्यटन के विकास ने भारी पर्यवरणीय समस्याएं पैदा की और ऐसी पर्यावरणीय समस्याएं और पारिस्थितिक असतुल ने पर्यटन उद्योग की आर्थिक स्थिरता को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया और इस समस्या को हल करने के लिए ''ईको टूरिज्म'' आंदोलन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

14. ममूटी (2007) ''ए स्टडी ऑन प्रॉब्लम्स, प्रोस्पेक्ट्स एण्ड पोटेन्शियलिटीज ऑफ टूरिज्म, कानपुर यूनीवर्सिटी''[4] ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि बैंगलौर और मैसूर से बड़ी संख्या में आईटी पेशेवर अब अपने सप्ताहांत विश्राम के लिए उत्तर मालाबार विशेष रूप से वायनाड़, कोझीकोड और कन्नूर का दौरा कर रह है और इसके परिणामस्वरूप इन क्षेत्रों में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं।

15. राजीवन (2007), ''हेरिटेज–रिच एण्ड एन्शिऐन्ट''[8] का मानना है कि हमारा पर्यटन उद्योग हमारी संस्कृति और विरासत के समृद्ध ताबूतों से बहुत ताकत खीचता है, लेकिन हम अभी तक उन कारणों को एक संगठित और प्रभावी तरीके से दिखाने में सफल नहीं हुए हैं। उनका मानना है कि समुद्र तट और क्षेत्र सांस्कृतिक रूप से समृद्ध होने के लिए पुनः प्रसिद्ध के रूप में दुनिया भर के यात्रियों को आकर्षित करने के लिए अद्वितीय गंतव्य की आवश्यकता है।

16. शिजू (2007), ''प्रॉस्पेक्ट्स ऑफ मेडिकल टूरिज्म इन इंडिया''[12] ने बताया कि, मेडिकल टूरिज्म भारत में पर्यटन उद्योग का एक उभरता हुआ बाजार है। एशियाई देशों के बीच, भारत अन्य एशियाई देशों के लिए एक प्रमुख प्रतियोगी के रूप में बढ़ गया है। जैसा कि अविश्वसनीय भारत अभियान ने सकारात्मक रूप से अवकाश प्राप्त पर्यटको की संख्या को जोड़ा है, चिकित्सा पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए विशेष अभियान गति कर रहा है।

17. सत्य सुंदरम (2007), ''टूरिज्म–इंडिया अवेकन्स् टू इनक्रेडिबल ऑर्पच्युनिटीज्''[17] का मानना है कि भारत जैसे देश में, ग्रामीण पर्यटन विशेष ध्यान देने योग्य है। विदेशी पर्यटकों को स्थानीय रीति–रिवाजों,

त्यौहारों, नृत्यों अनुष्ठानों में गहरी दिलचस्पी है और वास्तव में स्वदेशी लोगों की जीवन शैली उन्हे सम्मोहित करती है।

18. रवि चौहान (2006), ''ईको टूरिज्म ट्रेन्ड एण्ड चेलेन्जेज्''[2] ने कहा, हालांकि सरकार द्वारा कोई बड़े नीतिगत दस्तावेज जारी नहीं किए गए हैं। भारत या राज्य सरकारों द्वारा ईको–टूरिज्म को बढावा देने के संबंध में टूर ऑपरेटर्स और पर्यटकों को पर्यटन क्षेत्र में पर्यावरण को संरक्षित करने के अभियान के तहत कुछ गाइड लाइन्स जारी की गई हैं।

19. संजीव गुप्ता (2006), ''वर्ल्ड टूरिज्म इन दा न्यू मिलेनियम''[3] ने कहा कि सूचना का युग और वैश्वीकरण जिस तरह से कल का उपभोक्ता आतिथ्य उद्योग में कंपनियों के साथ व्यापार करेगा, उसमें बदलाव जारी रहेगा। यह उपभोक्ता गुणवत्ता, सुरक्षा और भलाई के अधिक से अधिक आश्वासनों की मांग करेगा। वे अमूर्त अनुभवों के लिए अधिक देखेंगे जो उनकी जेब और शारीरिक क्षमताओं से मेल खाते हैं।

अनुसंधान अंतराल

उपरोक्त साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश धार्मिक पर्यटन के संदर्भ में कोई तुलनात्मक अध्ययन नहीं किया गया है जो धार्मिक पर्यटन पर तीर्थयात्रियों के विचारों की पहचान करके, धार्मिक पर्यटकों की संतुष्टि और कठिनाइयों के स्तर की पहचान करने में शामिल जनसांख्यिकीय और यात्रा क्रम को हटाकर अध्यधिक व्यापक है। वर्तमान समय में प्रस्तुत शोध में इस तरह के अंतर को देखते हुए प्रासंगिकता पाता है। इसलिए, वर्तमान अध्ययन की प्रासंगिकता अनुसंधान में इस तरह के अंतर का एक दृश्य है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता

भारत विभिन्न धर्मो का परिक्षेत्र है यहां धार्मिक दृष्टिकोण से पृष्ठभूमि अध्यधिक व्यापक है तथा यहां विश्व प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों की एक बड़ी संख्या उपलब्ध है। इस प्रकार, यह तीर्थ पर्यटन के लिए उत्कृष्ट अवसर प्रदान करता है। यद्यपि मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में तीर्थ पर्यटन की संभावनाओं को उज्जवल करने के लिए कई पवित्र स्थल है, लेकिन घरेलू पर्यटन की गति और वृद्धि भारत का बकाया है और उसी के अनुरूप है। उल्लेखनीय है कि परिवहन, आवास, भोजन, पेयजल और स्वच्छता आदि

जैसे पर्यटन अवसंरचना सुविधाओं की कमी है। मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश संदर्भ राज्य सरकार और भारत सरकार और उनके पर्यटन मंत्रालयों ने इसमें गहरी दिलचस्पी लेने शुरू किया है। वर्तमान में भारत सरकार का मुख्य एजेंड़ा भारत का विश्व गुरू बनाने के दृष्टि कोण से पर्यटकों के भारतीय संस्कृति एवं इतिहास को जानने के लिए आमंत्रित किया जा रहा है। जिसके सहयोग के लिए उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश को तीर्थ स्थलों के रूप में विकसित करना।

साहित्य समीक्षा से ज्ञात हुआ कि मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में तीर्थ पर्यटन की वृद्धि और क्षमता का अध्ययन करने के लिए कोई व्यापक शोध नहीं किया गया है। मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के लिए और राष्ट्रीय स्तर पर तीर्थयात्रा पर्यटन गतिविधियों के इन तथ्यों और महत्व को ध्यान में रखते हुए, वर्तमान अध्ययन मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में धार्मिक पर्यटन का मूल्यांकन करने का एक प्रयास है।

वर्तमान अध्ययन धार्मिक पर्यटको की जनसांख्यिकीय और यात्रा पैटर्न की पहचान करने का प्रयास है, जिससे मंदिर के दर्शन, परिवहन, आवास, भोजन, खरीददारी, सुरक्षा, और पर्यटकां की सुरक्षा जैसी सुविधाओं से संबंधित धार्मिक पर्यटकों की संतुष्टि और कठिनाइयों की पहचान की जा सके। इस कारण से अध्ययन में तीर्थ यात्रियों को बेहतर सेवाएं प्रदान करने के लिए पर्यटन मंत्रलय, बंदोबस्ती मंत्रालय, मंदिर प्राधिकरण और पर्यटन स्त्रोतों द्वारा कुछ रणनीतियों का पालन करने की सिफारिश की गई है।

अध्ययन के उद्‌देश्य

- भारत सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा धार्मिक पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने हेतु वर्तमान कार्यक्रमों और नीतियों का अध्ययन करना।
- उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में पर्यटक की जनसांख्यिकीय और पर्यटन क्रम की पहचान करना।
- धार्मिक पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार सृजन एवं आर्थिक विकास पर होने वाले प्रभावों का मूल्यांकन एवं वैश्विक महामारी कोविड–19 के प्रभावों का अध्ययन।

- धार्मिक यात्रा के दौरान पर्यटक को होने वाली कठिनाइयों को सूचीबद्ध करना तथा उनके निराकरण हेतु प्रभावी रणनीति का विकास करना।

शोध परिकल्पना

- वर्तमान समय में धार्मिक पर्यटन में गुणात्मक वृद्धि नहीं हुई है।
- सरकारी नीति एवं सहयोग से धार्मिक पर्यटन को कोई भी महत्वपूर्ण बढ़ावा नहीं मिल रहा है।
- पर्यटन विकास के फलस्वरूप रोजगार सृजन के क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण विकास नहीं हुआ है।

अनुसंधान क्रियाविधि

प्रतिदर्श चयन :– धार्मिक परिप्रेक्ष्य के अतंर्गत विगत वर्षो में सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण से भारत सरकार तथा भारतीय जनता में धार्मिक विचारधारा के प्रति प्रेम बढ़ा है। जिसके प्रतिफल के रूप में सरकार द्वारा कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गये जैसे सबरीमाला मंदिर, अयोध्या मंदिर, प्रयागराज कुम्भ आदि, जो पर्यटन क्षेत्र में धार्मिक रूचि को प्रदर्शित करता है। अतः शोध के लिए प्रतिदर्श के रूप में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश राज्य के मुख्य 5 – 5 धार्मिक स्थलों को चयनित किया है।

सारणी 5 : वर्ष 2017–18 के अन्तर्गत भारतीय एवं विदेशी पर्यटक भ्रमण

उत्तर प्रदेश			**मध्य प्रदेश**		
पर्यटक संख्या (लाख)	**भारतीय**	**विदेशी**	**पर्यटक संख्या (लाख)**	**भारतीय**	**विदेशी**
वाराणसी	60.96	3.48	उज्जैन	83.31	4.21
अयोध्या	9.20	0.11	ओमकारेश्वर	31.88	0.93
मथुरा	76.60	0.28	मंदसौर	22.31	0.10
प्रयागराज	446.68	1.47	दतिया	14.77	0.06
बटेश्वर	67.96	0.47			

स्त्रोतः www.tourism.gov.in, www.upstdc.com , www.upstdc.com

नोट : उपरोक्त धार्मिक स्थलों का चयन आधार गत वर्ष में किया गया पर्यटक भ्रमण की संख्या तथा स्थानों पर धार्मिक पर्यटन स्थलों की संख्या है।

उत्तर प्रदेश के प्रतिदर्श धार्मिक पर्यटन स्थल

वाराणसी :– यह प्रदेश का प्रसिद्ध नगर है। इसे बनारस और काशी के नाम से भी जाना जाता है। इसे हिंदू धर्म में सर्वाधिक पवित्र नगरों में से एक माना जाता है एवं अन्य धर्मो के लिए महत्वपूर्ण है। यह संसार के प्राचीनतम बसे शहरों में से एक है। यह भगवान शिव के प्रसिद्ध मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध है

यहां के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल गंगा नदी, घाट, प्रमुख घाट, मंदिर आदि बनारस की धार्मिक पृष्ठभूमि को प्रदर्शित करते है। यह तीर्थ पर्यटन स्थल अति महत्वपूर्ण है। गत वर्ष (2017–2018) में यहां करीब 60. 958 लाख भारतीय एवं 3.489 लाख विदेशी तीर्थ पर्यटकों का आगमन हुआ।

अयोध्या :– यह सरयू नदी के तट पर स्थित अति प्राचीन धार्मिक एवं रमणीय नगर है इसे 'कौशल देश' भी कहा जाता है। यह भगवान श्रीराम की जन्मभूमि के रूप में भी विख्यात है। यहां की राम जन्मभूमि, रामकोट, हनुमान गढ़ी, राघवजी का मंदिर, नागेश्वर नाथ मंदिर, कनक भवन, जैन मंदिर विगत वर्षो में तीर्थ पर्यटन के रूप में अति विकसित हुई है इसके आर्थिक दृष्टि अवलोकन के लिए प्रतिदर्श चयन किया है। गत वर्ष (2017–2018) में करीब 9.200 लाख भारतीय एवं .0112 लाख विदेशी तीर्थ पर्यटकों का आगमन हुआ।

मथुरा :– मथुरा भगवान कृष्ण की जन्मस्थली के रूप में प्रसिद्ध है यहां प्रतिदिन लाखों की संख्या में यात्री भ्रमण के लिए आते है। इसे मंदिरों का नगर भी कहा जाता है क्योंकि यहां मान्यता है कि हर घर में मंदिर है। यहां कृष्ण जन्मभूमि, वृन्दावन, द्वारिकाधीश मंदिर, जयगुरूदेव मंदिर, रमण रेती, गोवर्धन, गोकुल, बरसाना, एवं श्रावण मास में गोवर्धन परिकृमा के लिए श्रद्धालु बहुतायात मे आते है अतः शोध अध्ययन के लिए प्रतिदर्श के रूप में मथुरा नगर का चयन किया गया है। गत वर्ष (2017–2018) में यहां करीब 76.603 लाख भारतीय एवं .279 लाख विदेशी तीर्थ पर्यटकों का आगमन हुआ।

प्रयागराज :– उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित एक नगर है जो संगम के नाम से भी जाना जाता है कुछ वर्ष पूर्व इसका नाम इलाहाबाद भी था। यह गंगा , यमुना एवं सरस्वती के पवित्र त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगाता है। हनुमान मंदिर, शंकर विमान मण्डपम् हनुमत् निकेतन, सरस्वती कूप, समुद्र कूप, मनकामेश्वर मन्दिर, शिवकुटी प्रसिद्ध है। संगम स्थली होने के कारण एवं कुंभ स्थान होने के कारण यह पर्यटन का प्रमुख केन्द्र है। गत वर्ष (2017–2018) में यहां करीब 446.686 लाख भारतीय एवं 1.468 लाख विदेशी तीर्थ पर्यटकों का आगमन हुआ।

चित्रकूट :– यह धाम कर्वी के नाम से प्रसिद्ध एवं मन्दाकिनी नदी के तट पर स्थित है। यहां चारों ओर से विध्य की पर्वत श्रंखलाए इसकी सुन्दरता का व्याख्यान करती हैं। यहां के प्रसिद्ध घाट श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करते है। मान्यताओं के अनुसार भगवान राम ने सीता और लक्ष्मण के साथ अपने

वनवास के चौदह वर्षो में ग्यारह वर्ष यहीं बिताए थे। इसके अतिरिक्त यहां कामदगिरी पर्वत, रामघाट, कामतानाथ मन्दिर एवं भरतमिलाप मन्दिर प्रसिद्ध है। गत वर्ष (2017—2018) में यहां करीब 67.964 लाख भारतीय एवं 0.0469 लाख विदेशी तीर्थ पर्यटकों का आगमन हुआ।

मध्य प्रदेश के प्रतिदर्श धार्मिक पर्यटन स्थल

उज्जैन :— यह शिप्रा नदी के तट पर स्थित प्राचीन नगर है, यह इतिहास में राजा विक्रमादित्य की राजधानी रहा। यहां 12 वर्ष पर महाकुंभ मेला लगता है। भगवान शिव के 12 ज्योर्तिलिंगों में एक महाकाल इसी नगरी में स्थित हैं। पर्यटन की दृष्टि से यहां कई तीर्थ स्थल महाकालेश्वर मंदिर, बड़े गणेश मन्दिर, मंगलनाथ मंदिर, हरसिद्धि मन्दिर, क्षिप्रा घाट, गोपाल मंदिर, गढकालिका देवी, भर्तृहरि गुफा, काल भैरव मंदिर आदि पर्यटकों के मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। गत वर्ष (2017—2018) में यहां करीब 83.313 लाख भारतीय एवं 4.211 लाख विदेशी तीर्थ पर्यटकों का आगमन हुआ।

ओमकारेशवर :— यह खांडवा जिले में स्थित भगवान शिव के बारह ज्योर्तिलिंगों में से एक है। ओमकारेशवर मन्दिर का निर्माण नर्मदा नदी से स्वयं हुआ है। जो कि भारतवर्ष की पवित्र नदियों में से एक हैं। इसी के समीप एक प्रसिद्ध मन्दिर ममलेश्वर है जो कि अहिल्याबाई के द्वारा बनाया गया था। अति प्राचीन एवं ज्योर्तिलिंगों में शामिल होने के कारण यह मन्दिर मध्य प्रदेश के प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों में से एक है। गत वर्ष (2017—2018) में यहां करीब 31.878 लाख भारतीय एवं .913 लाख विदेशी तीर्थ पर्यटकों का आगमन हुआ।

मन्दसौर :— पशुपतिनाथ मन्दिर यहां प्राचीन मन्दिर है, यह शिवनी नदी के किनारे स्थित है। इस मंदिर में भगवान पशुपतिनाथ के अष्टमुखी प्रतिमा विद्यमान है। प्रत्येक वर्ष कार्तिक मास में यहां एक माह तक मेले का आयोजन किया जाता है। जिस कारण यहां अध्यधिक संख्या में पर्यटक भ्रमण एवं दर्शन के लिए आते है। यहां का क्षेत्रीय परिवेश पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। गत वर्ष (2017—2018) में यहां करीब 22.774 लाख भारतीय एवं .010 लाख विदेशी तीर्थ पर्यटकों का आगमन हुआ।

दतिया :— यहां श्री पीताम्बरा पीठ स्थित है। यह कई पौराणिक कथाओं के साथ साथ वास्तविक जीवन में लोगों की 'तपस्थली' का केन्द्र है। यहां स्थित श्री वनखंडेश्वर शिव के शिवलिंग को महाभारत के समकालीन अनुमोदित किया गया है। पीताम्बरा देवी, धूमावती की धार्मिक दृष्टिकोण से अध्यधिक मान्यता

है। यहां प्रत्येक शनिवार मेले का आयोजन होता है जिस कारण पास के शहरो से अध्यधिक मात्रा में पर्यटक आते है, जो कि मुख्य आकर्षण का केन्द्र है। गत वर्ष (2017–2018) में यहां करीब 14.774 लाख भारतीय एवं .006 लाख विदेशी तीर्थ पर्यटकों का आगमन हुआ।

शोध अध्ययन की अवधि :– वर्ष 2013 से 2022 के लिए

अध्ययन का क्षेत्र :– उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश

अध्ययन की इकाई :– प्रस्तुत अध्ययन की इकाई उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के धार्मिक स्थल है। जिन्हें तीर्थ पर्यटन के रूप से विस्तृत रूप में विकसित करना है जिसमें यातायात, सुरक्षा, व्यवहार, आवास, पर्यावरण आदि दष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए विकास किया जाए।

तथ्य संकलन की स्त्रोत – अनुसंधान कर्ता द्वारा उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के धार्मिक स्थल से जुड़े तथ्यों को संककित करने हेत प्राथमिक तथा द्वितीय दोनों प्रकार के तथ्यों का संकलन किया जायेगा।

प्राथमिक समंक – प्राथमिक समंको को साक्षात्कार, प्रश्नावली, अनुसूची व क्षेत्र अध्ययन द्वारा प्रत्येक स्थल से पर्यटक संख्या के आनुपातिक आधार पर लिए जायेगे तथा कुल उत्तरदाताओं द्वारा प्राप्त समंक संख्या 1000 होगी।

द्वितीय समंक – शोधार्थी ने अपने अध्ययन में यथोचित आवश्यकतानुसार द्वितीय तथ्यों का भी प्रयोग करने का निश्चय किया है। द्वितीयक तथ्यों को एकत्रित करने के लिए पुस्तकें समाचार पत्र साप्ताहिक पत्रिकाऐं, जनरल तथा इंटरनेट का प्रयोग किया जायेगा।

तथ्य संकलन के उपचार :– प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार के माध्यम से उत्तरदाताओं की वास्तविक परिस्थितियों का अध्ययन किया जायेगा।

अध्ययन संयत्रों की जाँच :– तथ्य संकलन के उपकरणों की जाँच के पश्चात् उत्तरदाताओं से सम्पर्क के दौरान शोधार्थी अध्ययन की प्रत्येक इकाई से स्वयं मिलकर तथ्यों को एकत्रित करेगा।

एकत्रित तथ्यों का संपादन :– तथ्यों संकलन के पश्चात् सावधानीपूर्वक जाँच की जायेगी। तथा अनावश्यक सूचनाओं व तथ्यों को हटा दिया जायेगा। तत्पश्चात तथ्य एवं सूचनाओं को सूची के माध्यम से हस्तांतरित किया जायेगा।

तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीयन तथा उनकी व्याख्या एवं प्रस्तुतीकरण :– मास्टर चार्ट के निर्माण के पष्चात् तथ्यों का सावधानीपूर्वक वर्गीकरण एवं सारणीयन किया जायेगा। उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों की तत्काल व्याख्या करके उनका सारांश निकालकर निष्कर्ष प्रस्तुत किया जायेगा।

विश्लेषण के सांख्यिकीय उपकरण

वर्तमान शोध कार्य प्रकृति में मात्रात्मक और गुणात्मक सांख्यिकीय उपकरण का प्रयोग किया जायेगा। इसलिए एकत्रित आंकड़ा का विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक और साथ ही साथ उपसंहार, सांख्यिकीय उपकरणों का उपयोग किया जाएगा।

वर्णनात्मक आंकड़े :– वर्णनात्मक आंकड़े कच्चे डेटा को वर्णनात्मक जानकारी प्रदान करने और एक चयनित चर के विभिन्न पहलुओं को चिन्हित करने के लिए व्याख्यात्मक रूप से बदलने में मदद करते हैं। अध्ययन में शोधकर्ता का माध्य, मानक विचलन का प्रयोग किया जाएगा।

अनुमानित आंकड़े :– एक प्रतिनिधि नमूना डाटा से प्राप्त आंकड़ो के आधार पर, जनसंख्या मापदंडों के संबंध में निष्कर्ष निकालने के लिए ह्रासमान आंकड़ो का प्रयोग किया जाएगा। शोधकता को उपयुक्त अर्थमितीय साधनों का उपयोग किया जाएगा और तकनीकों का उपयोग प्रधान घटक विश्लेषण और कारक विश्लेषण आदि तकनीकों का प्रयोग करके किया जाएगा।

प्रस्तुत अध्याय योजना

प्रथम अध्याय

विश्व एवं भारतीय पर्यटन उद्योग – ऐतिहासिक एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य

द्वितीय अध्याय

उपलब्ध साहित्य की समीक्षा एवं शोध प्रविधि

तृतीय अध्याय

भारतवर्ष में धार्मिक पर्यटन का ऐतिहासिक एवं वर्तमान स्थिति का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।

चतुर्थ अध्याय

समंकों का विश्लेषण एवं परिकल्पना की जॉच।

पंचम अध्याय

धार्मिक पर्यटन का रोजगार सृजन एवं आर्थिक विकास में सहयोग।

षष्ठम् अध्याय

निष्कर्ष उपसंहार एवं सुझाव।

सन्दर्भ सूची

1. Babu, Sutheeshna.S. *et.al.*(*eds.*) (2008). Tourism Development Revisited. Concepts, Issues and Paradigms. Response Books New Delhi.
2. Chauhan, Ravee. (2006). *Eco Tourisms-Trends and Challenges*. Vista International Publishing House. Delhi. p.241.
3. Gupta, Sanjeev. (2006). *World Tourism in the New Millennium*. A.B.D Publishers. Jaipur.
4. Mamooty, T.P., Ph.D Thesis (2007) A study on problems, prospects and potentialities of Tourism. Kannur University.
5. Mishra Saurabh and Dinesh Ojha (2014), 'Role of Tourism in Economical Development',Surya Publication. New Delhi. P223.
6. Pandey Monika and Arunesh Parashar (2012), 'A Study of Social & Spiritual Impact of Spiritual Tourism on Coming Visitors', ACADEMICIA: An International Multidisciplinary Research Journal, Volume 2, Issue 3 (March, 2012) pp 157-159.
7. Pujari, Krishnaiah (2012), 'Problems and Prospects of Tourism in Andhra Pradesh – A Case Analysis of Chittoor District', International Journal of Research in Economics & Social Sciences, Vol 2, Issue 1 (January 2012), pp 48-61
8. Rajeevan, V. (2007). Culture, Heritage – Rich and Ancient. *Kerala Calling* April, 2007. pp 14-15.
9. Ravi, K. *Sustainable Tourism. A Way Forward from Eco-Tourism*. The Green Portal (Journal) July, 2007. p.13.
10. Sethi, Praveen. (2002). *Millennium Trends in Travel and Tourism*. Rajat Publications. New Delhi. p300.
11. Shu-Pin Chiu and Shih-Yen Lin (2011), 'Study on Risk Perceptions of International Tourists in India', African Journal of Business Management Vol.5 (7), 4 April, 2011, pp. 2742-2752.
12. Shyju, P.J. Prospects *of Medical Tourism in India* .The Green Portal (Journal) July, 2007. p40.

13. Singh Shalini (2008). *Profiles of Indian Tourism*(ed) A.P.H. Publishing Corporation. New Delhi, p.93.
14. Singh, Rana P.B. (2011), 'Pilgrimage and Religious Tourism in India: countering contestation and seduction' Holy Places and Pilgrimages: Essays on India. Shubhi Publications, New Delhi, 2011, pp. 307-334
15. Singh, Ratan Deep. (2003). *Hand Book of Environmental Guidelines for Indian Tourism*. Kanishka publishers distributors New Delhi
16. Sunanda, V.S. and Kumar Suresh, .N. *Economic Significance of Tourism in Kerala.* The Journal of Business Studies (Journal) University of Kerala. July, 2008, p.25.
17. Sundaran Satya, I., *Tourism: India Awakens to Incredible Opportunities.* Facts for you (journal) December, 2007. p.9.
18. Tharion, Thomas and Nair Gopalakrishnan.K. (2008). Medical Tourism in Kerala.Review of Social Sciences- (Journal) University of Kerala. Vol ix No.1. Jan-June, 2008.
19. Venugopal C.K. *Gateway for Tech. Tourism.* Kerala Calling (Journal) August 2008 pp. 36.37.
20. Vijayanand S. (2012), 'Pilgrimage Tourism Management Issues And Challenges With Reference To Tamil Nadu', Asian Journal of Multidimensional Research Vol.1 Issue 2, July 2012, pp 112-127.
21. World Tourism Organisation (2014), 'UNWTO tourism highlights', UNWTO publications, pp 6 – 13.